

दि कर्मिक पोस्ट

Global
School Of
Excellence,
Obedullaganj

वर्ष : 9, अंक : 30

(प्रति बुधवार), इन्दौर, 13 मार्च 2024 से 19 मार्च 2024

पेज : 8

कीमत : 3 रुपये

जलवायु परिवर्तन के कारण कौन से जीव हैं विलुप्त होने के कगार पर, अध्ययन में लगाया पता

नई दिल्ली। शोधकर्ताओं ने 9,200 से अधिक प्रजातियों को कवर करने वाले 290,000 से अधिक जीवाश्म रिकॉर्ड का उपयोग करते हुए, प्रमुख लक्षणों का एक डेटासेट एकत्र किया एक नए अध्ययन में, शोधकर्ताओं ने जीवाश्म रिकॉर्ड का उपयोग कर इस बात का पता लगाया कि जलवायु परिवर्तन के कारण जीवों के विलुप्त होने का कितना खतरा है। अध्ययन के परिणाम उन प्रजातियों की पहचान करने में मदद कर सकते हैं जो आज मानवजनित जलवायु परिवर्तन के कारण सबसे अधिक खतरे में हैं।

जलवायु परिवर्तन पृथ्वी पर जीवन के इतिहास के दौरान अनगिनत प्रजातियों के विलुप्त होने के लिए जिम्मेदार रहा है। लेकिन, आज तक, यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि कौन से कारण हैं जो प्रजातियों को इस तरह के परिवर्तन के प्रति अधिक या कम लचीला बनाते हैं और जलवायु परिवर्तन की भयावहता विलुप्त होने के खतरे को कैसे प्रभावित करती है। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं के नेतृत्व में किए गए इस नए अध्ययन में पिछले 48.5 करोड़ वर्षों में समुद्री अकशेरुकीय (जैसे समुद्री अर्चिन, घोंघे और शेलफिश) के जीवाश्म रिकॉर्ड का विश्लेषण करके इस प्रश्न का



उत्तर देने की कोशिश की गई। समुद्री अकशेरुकी जीवों का एक अच्छी तरह से अध्ययन किया गया जीवाश्म रिकॉर्ड है, जिससे यह पहचानना संभव हो जाता है कि प्रजातियां कब और क्यों विलुप्त हो जाती हैं। 9,200 से अधिक प्रजातियों को कवर करने वाले 290,000 से अधिक जीवाश्म रिकॉर्ड का उपयोग करते हुए, शोधकर्ताओं ने प्रमुख लक्षणों का एक डेटासेट एकत्र किया जो विलुप्त होने से बचने को प्रभावित कर सकता है, जिसमें पसंदीदा तापमान जैसे पहले गहराई से अध्ययन नहीं किए गए लक्षण भी शामिल हैं। जलवायु परिवर्तन के दौरान विलुप्त होने के खतरों का पता लगाने में कौन से कारण सबसे महत्वपूर्ण थे, यह समझने के लिए एक मॉडल विकसित करने के लिए इस जानकारी को जलवायु सिमुलेशन के आंकड़ों के साथ जोड़ा गया था। अध्ययनकर्ताओं ने पाया कि जलवायु परिवर्तन के अधिक संपर्क में आने वाली

प्रजातियों के विलुप्त होने के आधार अधिक थे। विशेष रूप से, जिन प्रजातियों ने भू-वैज्ञानिक चरणों में सात डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक तापमान में बदलाव का अनुभव किया, वे विलुप्त होने के प्रति काफी अधिक संवेदनशील थे। अध्ययनकर्ताओं ने यह भी पाया कि चरम जलवायु में रहने वाली प्रजातियों के विलुप्त होने के अधिक आधार थे, जो जानवर केवल तापमान की एक संकीर्ण सीमा (विशेष रूप से 15 डिग्री सेल्सियस से कम रेंज) में रह सकते थे, उनके विलुप्त होने की काफी अधिक आशंका थी। हालांकि, भौगोलिक सीमा का आकार विलुप्त होने के खतरों का सबसे शक्तिशाली भविष्यवक्ता था। बड़ी भौगोलिक सीमाओं वाली प्रजातियों के विलुप्त होने की संभावना काफी कम थी। शरीर का आकार भी महत्वपूर्ण था, छोटे शरीर वाली प्रजातियों के विलुप्त होने की अधिक आशंका थी। यह अध्ययन

साइंस पत्रिका में प्रकाशित किया गया है। अध्ययन किए गए सभी लक्षणों का विलुप्त होने के खतरों पर भारी प्रभाव पड़ा। उदाहरण के लिए, छोटी भौगोलिक सीमाओं और संकीर्ण तापीय सीमाओं वाली प्रजातियां उन प्रजातियों की तुलना में विलुप्त होने के लिए और भी अधिक संवेदनशील थीं जिनमें इनमें से केवल एक लक्षण था। अध्ययनकर्ता कूपर मालानोस्की ने कहा हमारे अध्ययन से पता चला है कि भौगोलिक सीमा समुद्री अकशेरुकीय के लिए विलुप्त होने के खतरे के सबसे सटीक पूर्वानुमान थे, लेकिन जलवायु परिवर्तन की भयावहता भी एक विलुप्त होने के पूर्वानुमान के लिए अहम है, जिसका आज जलवायु परिवर्तन की स्थिति में जैव विविधता पर प्रभाव पड़ता है। वर्तमान मानवजनित

जलवायु परिवर्तन पहले से ही कई प्रजातियों को विलुप्त होने के कगार पर पहुंचा रहा है, ये परिणाम उन जानवरों की पहचान करने में मदद कर सकते हैं जो सबसे अधिक खतरे में हैं और उनको बचाने के लिए रणनीतियों की जानकारी दे सकते हैं। प्रमुख-अध्ययनकर्ता प्रोफेसर एरिन सॉपे ने कहा भूवैज्ञानिक अतीत के साक्ष्य से पता चलता है कि जलवायु परिवर्तन के अनुमानों को देखते हुए, वैश्विक जैव विविधता को एक खतरनाक भविष्य का सामना करना पड़ रहा है। विशेष रूप से, हमारा मॉडल सुझाव देता है कि ध्रुवों या उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में रहने वाली 15 डिग्री सेल्सियस से कम की प्रतिबंधित थर्मल रेंज वाली प्रजातियों के विलुप्त होने का सबसे बड़ा खतरा होने के आधार हैं। हालांकि, यदि स्थानीय आधार पर जलवायु में बदलाव का अंतर काफी बड़ा होता है, तो यह विश्व स्तर पर भारी विलुप्ति का कारण बन सकता है, जो हमें छोटे सामूहिक विलुप्ति के करीब धकेल सकता है। शोध टीम के अनुसार, भविष्य के काम में यह पता लगाना चाहिए कि जलवायु परिवर्तन विलुप्त होने के अन्य कारणों, जैसे कि समुद्र के अम्लीकरण और एनोक्सिया या समुद्री जल में ऑक्सीजन की कमी के साथ कैसे संपर्क करता है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा ने भारत के प्रस्ताव को अपनाया, श्रीलंका-बोलीविया ने भी समर्थन किया

नई दिल्ली यूएनईए ने सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा में की गई प्रतिबद्धता की पुष्टि की। दरअसल, यह एक ऐसी प्रतिबद्धता है जो सतत विकास के तीन आयामों - एकीकृत, अविभाज्य, अन्यान्याश्रित और पारस्परिक रूप से मजबूत करने पर जोर देती है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा ने शुक्रवार को केन्या के नैरोबी में आयोजित अपने छठे सत्र में टिकाऊ जीवन शैली पर भारत के प्रस्ताव को अपनाया। केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय ने कहा कि यह श्रीलंका और बोलीविया द्वारा यह सह-प्रायोजित प्रस्ताव था, जिसे सभी भाग लेने वाले सदस्य देशों ने अपनाया। बता दें कि हथ्र का छठा सत्र 6 फरवरी को शुरू हुआ और शुक्रवार को समाप्त हो गया। मंत्रालय ने आगे बताया कि किस तरह प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी पर्यावरण के लिए जीवन



शैली (LiFE आंदोलन) का समर्थन कर रहे हैं। साथ ही देशों से ग्रह-अनुकूल जीवन पद्धतियों को अपनाने और गहन उपभोक्तावादी व्यवहार से दूर जाने का आग्रह कर रहे हैं। मंत्रालय ने कहा कि पीएम मोदी ने ग्लासगो में संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन के दौरान विश्व नेताओं के शिखर सम्मेलन में इस अवधारणा की कल्पना की थी। उन्होंने 20 अक्टूबर, 2022 को गुजरात में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी में संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस की उपस्थिति में मिशन स्ट्रथ का शुभारंभ किया था।

यूएनईए ने सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा में की गई प्रतिबद्धता की पुष्टि की। दरअसल, यह एक ऐसी प्रतिबद्धता है जो सतत विकास के तीन आयामों - एकीकृत,

अविभाज्य, अन्यान्याश्रित और पारस्परिक रूप से मजबूत करने पर जोर देती है। वहीं, इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी शिक्षार्थी सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त करें। संकल्प व्यवहार स्थायी जीवन शैली की दिशा में व्यवहारिक परिवर्तनों की क्षमता को पहचानता है। इसने 2030 एजेंडा में की गई प्रतिबद्धता की भी पुष्टि की, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हर जगह लोगों को सतत विकास, प्रकृति के साथ सद्भाव में जीवन शैली को बढ़ावा देने के लिए प्रासंगिक जानकारी और जागरूकता तक पहुंच हो।

रामराज्य के पावन मूल्यों को आत्मसात कर विकसित मध्यप्रदेश के निर्माण को समर्पित है राज्य सरकार - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंत्रि-परिषद के सदस्यों सहित विमान से अयोध्या धाम रवाना

विमानतल पर जय श्रीराम के उद्घोष के साथ हुआ स्वागत

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेशवासियों से रामलला के दर्शन का किया आह्वान



भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राम राज्य के पावन मूल्यों और आदर्शों को आत्मसात कर विकसित और प्रगतिशील मध्यप्रदेश के निर्माण के पवित्र संकल्प के क्रियान्वयन के लिए राज्य सरकार समर्पित है। आज की मंत्रि-परिषद की बैठक प्रभु श्रीराम को समर्पित की है, हमारा परम सौभाग्य है कि प्रभु श्रीराम का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए प्रदेश के मंत्री-मंडल को अयोध्या धाम प्रवास का अवसर प्राप्त हुआ। सम्राट विक्रमादित्य और अयोध्या धाम व प्रभु श्रीराम का संबंध कालातीत है, हम सबके रोम-रोम में राम बसे हैं। भगवान श्रीराम के दर्शन और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर राज्य सरकार जनकल्याण कार्यों को और विस्तार देगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंत्रि-परिषद के सदस्यों के साथ अयोध्या धाम भगवान श्रीराम

के दर्शन के लिए रवाना होने से पहले विमानतल पर मीडिया प्रतिनिधियों से चर्चा कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेशवासियों से भी रामलला के दर्शन का आह्वान किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंत्रि-परिषद की बैठक के बाद मंत्री-मंडल के सदस्यों के साथ मंत्रालय से बस द्वारा विमानतल पहुंचे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के विमानतल पहुंचने पर जय श्रीराम के उद्घोष एवं ढोल के उत्साह के साथ उनका स्वागत किया गया। राजाभोज विमानतल पर अधिकारियों ने पगड़ी पहनाकर, तिलक कर जय श्रीराम अंकित अंग वस्त्र तथा पुष्प-गुच्छ भेंट कर मुख्यमंत्री डॉ. यादव और मंत्रि-परिषद के सदस्यों का अभिनन्दन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव और मंत्रि-परिषद के सदस्य सपत्नीक विमान से अयोध्या के लिए रवाना हुए।

सौर ऊर्जा की सुलभता से विकराल होता भू-जल संकट

भारत सौर ऊर्जा की क्रांति से गुजर रहा है। पिछले साल के अंत तक देश में 42 सोलर पार्क कार्य कर रहे थे, वहीं कुल उत्पादन क्षमता 77.2 गीगा वाट तक पहुँच गयी। साल भर में 300 से अधिक सूरज से तपती दिन के साथ भारत में सालाना सौर ऊर्जा की अनुमानित क्षमता 5000 ट्रिलियन वाट अवर है, जो सारे दूसरे स्रोतों के सालाना उत्पादन से भी ज्यादा है। सौर ऊर्जा के प्रसार में आयी गति ग्रिड के इतर भी हो रही, जिसमें कृषि खास कर ग्रामीण क्षेत्र भी शामिल हैं। भारत की खेती में सौर ऊर्जा के इस्तेमाल से एक नए किस्म की क्रांति हुई है। एक अध्ययन के मुताबिक साल 2026 तक कम से कम 30 लाख किसान सौर ऊर्जा से संचालित पम्प का उपयोग करके अपने खेतों के नीचे से हजारों साल से जमा भू-जल सिंचाई के लिए निकाल रहे होंगे। सोलर पम्प के इस्तेमाल से भू-जल सिंचाई के लिए प्रभावी रूप से मुफ्त और अथाह पानी उपलब्ध हो जा रहा है जो छोटे किसानों तक फसलों के उत्पादन में वृद्धि के रूप में प्रभावी है।

सोलर पम्प की मदद से भू-जल का अनियंत्रित दोहन क्या वास्तविक रूप से किसानों के हित में है? या पानी के खिलाफ भू-जल के खत्म हो जाने तक ये युद्ध का एलान है, जो धीरे धीरे सोलर पम्प के रूप में हर गाँव और यहां तक हर खेत में पहुँच रहा है? भारत में खेती किसानी हमेशा से मानसून पर निर्भर रही है। ऐसी परिस्थिति में सिंचाई का अन्य कोई भी स्रोत जो किसानों की मानसून पर निर्भरता कम कर दे किसानों के लिए वरदान जैसा है। सौर ऊर्जा से चलने वाला सोलर पम्प ऐसा ही एक नवाचार था, जिसने ना सिर्फ किसानों को निर्बाध पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की और साथ ही साथ महंगे जीवाश्म ईंधन पर से निर्भरता भी कम की।

खासकर गर्म और सूखे क्षेत्रों के किसान के बीच अब सिंचाई के लिए कम लागत वाले और सुलभ सोलर पंप खूब प्रचलित हो रहे हैं, जिससे ना सिर्फ जीवाश्म ईंधन की जरूरत खत्म हो जा रही है, बल्कि बदतर विद्युत आपूर्ति पर निर्भरता का समाधान भी मिल रहा है।

सैद्धांतिक रूप से सोलर पम्प के इस्तेमाल से फसल उत्पादन को बढ़ावा मिलता भी दिख रहा है। लेकिन हर जगह उपलब्ध सोलर पम्प के द्वारा निर्बाध रूप से पानी दोहन करने की अनुमति

देने से भारत ही नहीं पूरी दुनिया भर में एक्काफर्स (भू-जलभर) सूखते जा रहे हैं। सिंचाई सुनिश्चित करने के अभियान के कारण, तेजी से उजाड़ और सूखे भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

भारत में आधुनिक जल-प्रबंधन का इतिहास उत्तरी भारत में साल 1837 में मॉनसून की कमी के चलते दोआब में पड़े भीषण अकाल के बाद गंगा नदी के पानी से हरिद्वार से फतेहपुर तक एक लम्बे नहर परियोजना तक जाता है। आजादी तक उत्तर से दक्षिण में परम्परागत जल प्रबंधन के इतर नदियों पर बांध बना कर सिंचाई सुनिश्चित की जाती रही है, हालाँकि यह सिलसिला अब भी जारी है।

भारत में जनसंख्या और अनाज उत्पादन की बीच बढ़ती खाई को पाटने के लिए 70 के दशक में हरित क्रांति का दौर आया और नहरों के विशाल नेटवर्क से हर खेत तक पानी पहुँचाने की कवायद शुरू हुई। कृत्रिम सिंचाई द्वारा प्यासी फसलों को 'हरित क्रांति' का पानी पिलाया गया। पर धीरे-धीरे खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के क्रम में नदियाँ खाली होती गयी। अब धीरे-धीरे हमारे निशाने पर हजारों सालों से इकठ्ठा भू-जल आया। नहर सिंचाई के साथ-साथ सरकारी मदद और कहीं-कहीं तो निःशुल्क विद्युत चलित भूजल आधारित पानी के पम्प प्रचलन में आये। और यहीं से भू-जल का बड़े पैमाने पर दोहन शुरू हुआ और



पिछली सदी का अंत आते आते क्षेत्र के अनुकूल गेहूँ के अलावा सबसे ज्यादा पानी की जरूरत वाली फसल धान पश्चिम भारत में काफी लोकप्रिय हुई। इसी के साथ भू-जल का स्तर गिरना शुरू हुआ और ये क्रम आज भी जारी है। इसी क्रम में सौर ऊर्जा के विस्तार और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने के उद्देश्य से अन्य उपयोग के अलावा सोलर पम्प भी सरकारी मदद के साथ चलन में आये। सोलर पम्प काफी तेजी से लोकप्रिय हुआ, खास कर सूखे और गर्म इलाकों में और नतीजा भू-जल स्तर में खतरनाक स्तर तक की गिरावट। हरियाणा, पंजाब और राजस्थान भू-जल के बेजा दोहन के प्रमुख क्षेत्र हैं जहाँ भू-जल विकास 300-400 ल तक पाया गया है, जिसका मतलब है कि सालाना जितना भू-जल बारिश से रिचार्ज होता है उसका तीन से चार गुणा पानी जमीन से निकल लिया जा रहा है। सोलर पम्प भारत में कम बारिश और सूखा प्रभावित पश्चिमी राज्यों में ज्यादा लोकप्रिय हुआ है। राजस्थान जैसे मरुस्थली राज्य में किसी अन्य राज्यों के मुकाबले सबसे ज्यादा सोलर पम्प का उपयोग हो रहा है। पिछले एक दशक में, सरकार ने लगभग

100,000 किसानों को सब्सिडी पर सोलर पंप दिए हैं। हालाँकि इससे सिंचाई का दायरा बढ़ा है पर साथ साथ अराजक तरीके से पानी के दोहन से ना सिर्फ भू-जल स्तर तेजी से गिर रहे हैं; कहीं-कहीं तो ये स्तर 400 फुट नीचे तक चला गया, बल्कि परम्परागत कृषि पद्धति भी बदल रही है जो एक गंभीर संकट है। और ये केवल राजस्थान की कहानी नहीं है, हर क्षेत्र में ये तेजी से फैल रहा है।

बिना किसी रोक-टोक और नियंत्रण के सब्सिडाइज्ड सोलर पंप से पानी का दोहन पर्यावरणीय संकट के अलावा सामाजिक संघर्ष का जरिया भी बनता जा रहा है जब संपन्न किसान शक्तिशाली सोलर पम्प से पाताल तक से पानी निकाल कर गरीब किसानों पर पानी के लिए मनमाना शर्तें भी थोप रहे हैं।

जहाँ सोलर पम्प का नवाचार, जीवाश्म ईंधन का विकल्प बनकर, सूखे और उजाड़ क्षेत्रों को खेती लायक बना कर, अनिश्चित मानसून पर से निर्भरता कम कर, छोटे और मझोले किसानों के जीवनयापन सुनिश्चित कर खाद्य सुरक्षा में सहायक हो सकता था, आज केवल अराजक भू-जल दोहन का साधन बन कर रह गया है। आधुनिक कृषि के चलन के कारण पहले से ही सूखने के खतरों से दो चार हजारों सालों से पानी की थाती रहे एक्काफर्स/भू-जलभर सोलर पम्प की सफलता के कारण अब हमेशा के लिए सूख रहे हैं।

वर्षा आधारित परम्परागत सिंचाई से इतर कृत्रिम सिंचाई खाद्य सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी मानी गयी, पर बढ़ी स्तर पर सतही जल और भू-जल के अबाध दोहन के कारण ये दोनों प्रणालियाँ अपनी चरम सीमा तक पहुँच गयी। सदानीरा नदियाँ तक सूख रही हैं, भू-जल पाताल में चला जा रहा है। और यह कहानी सिर्फ भारत की नहीं है, पिछले तीन दशकों में, मेक्सिको से मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया तक गरम और शुष्क क्षेत्रों में सैकड़ों मिलियन किसान अब सिंचाई के लिए भूमिगत स्रोत पर निर्भर हैं। विश्व बैंक के एक अध्ययन के अनुसार दुनिया के 43 प्रतिशत सिंचाई भू-जल आधारित है, कुल भू-जल दोहन का 70 ल सिंचाई की भेंट चढ़ रहा है, जो बारिश से हुए कुल सालाना रिचार्ज से बहुत ज्यादा है। यानी जितना पानी जमीन से निकल रहा है, उससे कम ही सालाना रिचार्ज हो पा रहा है। चालीस देशों के 1700 से अधिक एक्काफर्स/भू-जलभर के अध्ययन से भी इस बात की पुष्टि होती है कि भू-जल का दोहन उसके सालाना रिचार्ज से बहुत ज्यादा है, तभी तो भारत सहित अफगानिस्तान, ईरान, स्पेन, मेक्सिको, अमेरिका, चिली, सऊदी अरब में भू-जल का स्तर एक मीटर से ज्यादा के दर से नीचे जा रहा है।

अयोध्या धाम पहुंचकर धन्य हुआ जीवन- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि अयोध्या धाम पहुंचकर भगवान श्रीराम के दर्शन करने से जीवन धन्य हो गया है। कई जन्मों के पुण्य का प्रसाद है यह दर्शन। ऐसा प्रतीत होता है कि यहां प्रभु राम स्वयं अपने रूप में विराजमान हैं। भगवान राम के गृह-गृह और अन्य स्थानों के दर्शन का सौभाग्य मिला। भगवान राम और महाकाल सभी पर कृपा करें और सनातन संस्कृति की ध्वजा इसी तरह लहराती रहे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज मध्यप्रदेश मंत्रि-परिषद के सदस्यों के साथ विशेष विमान द्वारा भोपाल से अयोध्या पहुंचने के पश्चात टीवी चैनल्स प्रतिनिधियों से चर्चा कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी से देश का एक-एक नागरिक जुड़ा हुआ है। प्रधानमंत्री जी का ध्येय वाक्य है कि समूचा भारत देश उनका परिवार है। ये उनके उदात्त विचार हैं। हमें गर्व है कि वे हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री हैं। बच्चा-बच्चा उनके प्रति श्रद्धानवत है और उनके परिवार के इस भाव का स्वागत करता है। उनके नेतृत्व में हम सभी राष्ट्र की प्रगति के लिए कार्य कर रहे हैं। अयोध्या में राम मंदिर परिसर में पहुंचने के बाद मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और मध्यप्रदेश मंत्रिपरिषद के सदस्य रामभक्ति में लीन हो गए। श्रीराम जय राम जय-जय राम के उद्घोष के साथ मंत्रीगणने भक्तिभाव के साथ खड़े होकर आराधना की। मंदिर के गर्भ-गृह में पहुंचकर मुख्यमंत्री डॉ. यादव, मंत्रीगण और साथ गए परिजन ने श्रीराम दरबार के समक्ष दंडवत प्रणाम किया। उन्होंने सम्पूर्ण मंदिर परिसर का अवलोकन भी किया। इस अवसर पर प्रभु श्रीराम से प्रदेश और देश के नागरिकों की खुशहाली की प्रार्थना की गई। साथ ही विश्व कल्याण की कामना भी की गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मंत्रि-परिषद की अयोध्या यात्रा ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह यात्रा भगवान राम के प्रति आदर की अभिव्यक्ति है। भगवान श्रीराम के दर्शन के लिए अयोध्या जाने का निर्णय लिया गया था। इस निर्णय और संकल्प के परिपालन में आज मंत्रि-परिषद के सदस्य जीवन साथी के साथ अयोध्या पहुंचे और रामलला के दर्शन लाभ प्राप्त किए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को उत्तरप्रदेश के कृषि मंत्री श्री सूर्यप्रताप शाही और ट्रस्टी श्रीराम जन्मभूमि मंदिर तीर्थ क्षेत्र डॉ. अनिल मिश्रा सहित मंदिर समिति के पदाधिकारियों ने श्रीराम मंदिर की प्रतिकृति भेंटकर सम्मानित किया। उत्तरप्रदेश के विभिन्न मंत्री और अन्य जनप्रतिनिधियों ने भी मुख्यमंत्री डॉ. यादव का स्वागत अभिनंदन किया।



उत्तर-पूर्वोत्तर के कुछ हिस्सों को छोड़कर देश में शुष्क रहेगा मौसम, दक्षिण में गर्मी से राहत नहीं

मुंबई। मार्च का दूसरा सप्ताह बीतने को है, लेकिन उत्तर भारत में मौसम का मिजाज लगातार बदल रहा है। सुबह और शाम के समय सर्दी का सिलसिला बरकरार है। जबकि दिन के समय गर्मी सताने लगी है। तापमान ने भी रफ्तार पकड़ना शुरू कर दिया है।

देश की राजधानी तथा एनसीआर के आसमान में आज बादलों की आवाजाही बनी रहेगी, कुछ हिस्सों में बौछारें भी पड़ सकती हैं। सर्दियों के बाद दिल्ली में तापमान ने छलांग लगाकर 31 डिग्री सेल्सियस को पार कर दिया है। आज यहां अधिकतम तापमान के 32 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान के 13 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान लगाया गया है।

वहीं, दक्षिण भारत में तापमान में उतार चढ़ाव की बात करें तो, मौसम विभाग के मौसम संबंधी पूर्वानुमान के मुताबिक, अगले दो दिनों के दौरान केरल और माहे में और अगले तीन दिनों के दौरान रायलसीमा, तमिलनाडु, पुडुचेरी और कराईकल में गर्म और नमी से भरे



मौसम के बने रहने की आशंका जताई गई है।

पश्चिमी विक्षोभ मध्य स्तरों पर पश्चिमी हवाओं में एक गर्त के रूप में जारी है, एक और ताजा पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय हो गया है। इसके कारण 13 और 14 मार्च को जम्मू और कश्मीर, लद्दाख, गिलगित-बाल्टिस्तान और मुजफ्फराबाद, हिमाचल प्रदेश

और उत्तराखंड के कुछ हिस्सों में बिजली गिरने, गरज के साथ हल्की से मध्यम बारिश तथा ऊंचाई वाले हिस्सों में बर्फबारी होने की आशंका जताई गई है। इन राज्यों में 15.6 मिमी से 64.4 मिमी तक बारिश हो सकती है।

वहीं, 13 मार्च को उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के पंजाब, उत्तरी हरियाणा, चंडीगढ़, उत्तर-पश्चिमी उत्तर प्रदेश और

पश्चिमी राजस्थान के कुछ हिस्सों में हल्की बारिश होने की संभावना है, इन सभी राज्यों में इन सभी राज्यों में 0.1 मिमी से 15.5 मिमी तक बारिश होने का पूर्वानुमान है।

12 से 14 मार्च के दौरान उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल और सिक्किम के कुछ हिस्सों में हल्की वर्षा होने की संभावना है, इन हिस्सों में 0.1 मिमी से 15.5 मिमी तक बारिश हो सकती है।

वहीं 13 से 17 मार्च के दौरान पश्चिम बंगाल में गंगा के तटीय इलाकों, 14 से 17 मार्च के दौरान ओडिशा में, 16 और 17 मार्च को झारखंड, पूर्वी मध्य प्रदेश, विदर्भ और छत्तीसगढ़ में, 17 मार्च को पश्चिमी मध्य प्रदेश में भी बरसेंगे बादल। इन सभी राज्यों में भी 0.1 मिमी से 15.5 मिमी तक बारिश होने का अनुमान है।

मौसम विभाग की मानें तो, अगले सात दिनों तक अरुणाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में हल्की से मध्यम बारिश तथा बर्फबारी की संभावना है, यहां 15.6 मिमी से 64.4 मिमी तक बारिश हो सकती है। वहीं, 13 से 15 मार्च के दौरान असम और मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा के अलग-अलग हिस्सों में हल्की बारिश होने की संभावना है। पूर्वोत्तर भारत के इन राज्यों में 0.1 मिमी से 15.5 मिमी तक बारिश होने का पूर्वानुमान लगाया गया है।